RNI No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-3 • अंक-9 • त्रैमासिक • जनवरी-मार्च, 2015

बाल विकास : समस्याएँ एवं समाधान

डॉ. गिरिराज भोजक

शिक्षा समग्र विकास की आधार शिला हैं। बाल्यकाल से ही एक विद्यार्थी अपने संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की यात्रा विद्यालय से प्रारंभ करता है। विद्यार्थी जीवन का यह प्रारंभिक पड़ाव भाषा विकास, आदत निर्माण, शब्द भण्डार, स्मृति विकास आदि के संदर्भ में अति महत्त्वपूर्ण है। बी.एड. पाठ्यचर्या के अन्तर्गत शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा प्रशिक्षणार्थी को विविध अवस्थाओं के वृद्धि एवं विकास से संबंधित प्रत्ययों से अवगत करवाया जाता है। पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर पर एक बालक के व्यक्तित्व में अनेक परिवर्तन घटित होते हैं तथा विकास की दृष्टि से यह एक जटिल अवस्था है। मनोवैज्ञानिकों ने बाल्यावस्था को मानव विकास का 'अनोखा काल' कहा है।

बाल्यावस्था को प्रमुखतः दो स्तर पूर्व बाल्यकाल एवं उत्तर बाल्यकाल में बांटा गया है। शैशवास्था के बाद 5 से 12 वर्ष तक की अवस्था में प्रथम 3 से 6 वर्ष तक विकास की गति न्यून तत्पश्चात् तीव्र गति से बालक का विकास होता है। विद्यालय के प्राथमिक शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा इस अवस्था में बालक पर विशेष ध्यानकेन्द्रण की न्यूनता पाई जाती है तथा 'अभी तो यह बच्चा है' कहकर अपने दायित्व की पूर्ति कर ली जाती है। फ्रायड के अनुसार बाल्यावस्था को अतिमहत्त्वपर्ण मानते हुए कहा गया है कि 'बालक पांच वर्ष की आयु तक अपने संपूर्ण मानसिक विकास का लगभग 85 प्रतिशत भाग पूर्ण कर लेता है।'

बालक के अति महत्त्वपूर्ण विकास काल में अनेक बालकों में निम्नलिखित प्रमुख व्यवहारात्मक समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैः

1. वाणी दोष, 2. अंगूठा चूसना, 3. नाखून काटना, 4. मनस्ताप, 5. क्रोध एवं आक्रामकता, 6. अधिगम असमर्थतता, 7. मंद बुद्धिता

यद्यपि विविध व्यवहारात्मक दोषों के लिए अनेक शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक एवं सामाजिक (परिवार एवं समूह) कारण विद्यमान होते हैं फिर भी अधिकतर व्यावहारिक